5. राजबली पाण्डेय ,हिन्दू संस्कार ।

B.A. Sanskrit
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- पंचम
Semester –5

आधारभूत पत्र (Core paper)		**पूर्णाङ्क :100**
Paper Code BSA-E-512	**भारतीय परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व विकास**	**सत्रान्त परीक्षा : 70**
		सत्रीय मूल्याँकन : 30
		क्रेडिट : 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड- क (Section-A)ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

खण्ड- ख(Section-B)पुरुष की अवधारणा

खण्ड- ग(Section-C)व्यक्तित्व के प्रकार

खण्ड- घ(Section-D)व्यवहारिक उन्नति का मूल्याङ्कन

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र उस भारतीय दार्शनिक परम्परा से अवगत हो सकेंगे, जो उनके व्यक्तित्व एवं दार्शनिक चिन्तन के विकास की उन्नति में सहायक सिद्ध होगी । यह पाठ्यक्रमछात्रों के वैयक्तिक विकास में तथ्यात्मक एवं प्रयोगात्मक विधि के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा ।

पाठ्यक्रम-अध्ययनपरिणाम(Course Outcomes)-

- इसक अध्ययन से छात्र व्यकित्व विकास के विविध आयामों से परिचित होकर उन्नत व्यकित्व के धनी होगे।
- पुरूष के वास्तविक स्वरूप को समझकर असदाचरण से निवृत्त होंगे ।
- इससे छात्रों के सभी प्रकार के व्यवहार मे अपेक्षित सुधार होगा ।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

घटक (Unit)- 1–ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : ऋग्वेद - 1.164.37,छान्दोग्यउपनिषद् - 6. 2.3, 6.8.6, 8.1.4 , बृहदारण्यकोपनिषद2.5.18-19

खण्ड –ख (Section–B)

पुरुष की अवधारणा

घटक (Unit) – 1पुरुष की अवधारणा -(गीता -1.1-30) जीव मुख्य रूप में और प्रकृति (आठ प्रकार की) आवरण रूप में, क्षेत्रज्ञ मुख्य रूप में क्षेत्र आवरण रूप में- गीता, अध्याय -13.1.2, 5-6,19-23 , अक्षर मुख्य रूप में और क्षर आवरण रूप में गीता 15.7-11,6-19)

खण्ड–ग (Section–C)

व्यक्तित्व के प्रकार

घटक (Unit) 3 - व्यक्तित्व के प्रकार - गीता, -14.5-14,17.2-6, 17.11-21

खण्ड–ग (Section–C)

व्यवहार में सुधार के उपाय

घटक (Unit) 3 - व्यवहार में सुधार के उपाय -इन्द्रिय एवं मन पर नियंत्रण (गीता, 2.59-60-64 और 68, 3. 41-43, 6.19-23, श्रद्धा (गीता, 9.3, 22, 23-28,30-34)

स्वधर्म की पहचान - आंतरिक प्रेरणा - (गीता, 2.31,41-44, 3.4, 5,8, 9, 27-30, 33-34, 4. 18-22,5. 11-12, 7.15, 18,20 - 23, 27-29)सामजिक धारा में व्यक्ति के सहज आवेगों का समायोजन। (गीता18. 41-62)

प्रश्नपत्र निर्माण-प्रारूप-

खण्ड क के अन्तर्गत सभी खण्डों से विकल्प के साथ कुल पांच समालोचनात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न प्रष्टव्य रहेंगे ।

अंक 05x6= 30

खण्ड ख के अन्तर्गत सभी खण्डों से विकल्प के साथ कुल चार समालोचनात्मक / व्याख्यात्मक दीर्घोत्तरीय प्रश्न प्रष्टव्य होगें ।

अंक 04x10= 40

Suggested Books/Readings:

1. Radhakrishana, The Bhagvadgītā.
2. Gītā with Hindi Translation, Gita Press, Gorakhpur